वृद्धाश्रम के लिए परियोजना प्रस्ताव

मुक्ता चैरिटेबल ट्रस्ट

(एक चैरिटी संगठन)

द्वारा प्रस्तुत:

जयपुर

MUKTA CHARITABLE TRUST

JAIPUR

(A CHARITY ORGANISATION)

स्वयंसेवी संस्था का नाम: मुक्ता चैरिटेबल ट्रस्ट MUKTA CHARITABLE TRUST , JAIPUR

भुवनसिंह चौहान : अध्यक्ष : President Bhuwan Singh Chauhan

रिद्धिमा सिंह : उपाध्यक्ष :Vice President Riddhima Singh

बसंत डे : प्रोजेक्ट हेड (वृद्धाश्रम) : Project Head (Old Age Home) Basant Dey

Schemes Name: कार्यक्रम के नाम : वृद्ध कल्याण योजना

परियोजना शीर्षक: “अनुकुल” वृद्ध ग्राम

Land require: 3000 Square guz (2484.3 Square meter)

1000 require Go sala & plantation

1000 Squire Garden ,swimming Pool ,Parking & Other

Consternation area: 500 Square Guz.

1.Address: Q No. 66/15,Ayodhya Marg, Hera Path, Mansarovar, Jaipur, Rajasthan (India) Pin Code: 302020

WHATSAPP: 9079927476

Contact Number: 9785240472, 9079927476

Mail ID:bhuwanapex@gmail.com/basant.dey@gmail.com

Website: www.muktacharitabletrust.org

REGISTRATION NUMBER: 201901019001361

DATE OF REG.15/02/2019.

PAN NUMBER: AAGTM1412Q

ACCOUNT NUMBER: 2794101012291

IFSC CODE : CNRB0002794

CANARA BANK,KIRAN PATHH,MANSAROVER,JAIPUR.

KEY ISSUES: EDUCATION AND LITERACY AND FAMILY WELFARE MINORITY

Vision

Mukta Charitable Trust is committed to make a coordinated effort with compassion and understanding to transform social attitudes towards senior citizens. The effort is to create the infrastructure to empower every older person.

Mission

Mukta has been set up to initiate better interaction between the generations. It endeavours to:

Bring about a change in perceptions about Old Age

Initiate steps towards senior citizens friendly environment

Evolve a sense of moral and social responsibility towards senior citizens

Advocate for the needs and rights of senior citizens

Extend a helping hand to senior citizens wherever required

समस्या वक्तव्य

(PRESENT MARKET POSITION OF OLD AGE HOMES)

ओल्ड एज होम (**Old Age Home**) का अर्थ होता है, "वृद्धाश्रम"। इसका मतलब होता है, वृद्धों का आश्रम अर्थात जहां पर एक साथ कई वृद्ध स्त्री और पुरुष एक घर में एक साथ रहते हो। वृद्धाश्रम कोई प्रकृति की देन नहीं है, बल्कि यह उन वृद्धों के व्यस्क और जवान पुत्रों, पुत्रियों, पुत्रवधू और अपने ही परिवार के सदस्यों द्वारा तिरस्कृत वृद्धों का समाज है। जो कहने के लिए वृद्ध माता-पिता हमारे सभ्य समाज में फिट नहीं बैठते है।

यह भारत जैसे देश की विडंबना है कि जिस धरती पर माता पिता को भगवान का स्वरूप मानते हैं। उसी धरती पर उनकी यह स्थिति दयनीय है। यह हमारे समाज की संस्कृति के बिल्कुल विपरीत है। कुछ संभ्रांत परिवार के लोग अपने माता-पिता को खुद ही वृद्धा आश्रम छोड़ कर आते हैं। जबकि कई माता-पिता ऐसे हैं जिनकी हालत इतनी बुरी होती है कि उनको घर से निकाल कर सड़कों पर दर-दर भटकने के लिए छोड़ दिया जाता है।

हमारा समाज इतना अपंग और कमजोर हो गया है कि वे केवल दो प्राणी जिनको कहने के लिए मात्र माता-पिता कहते हैं, उनकी देखभाल नहीं कर सकते। उनकी छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकते। इस ढलती उम्र में उनको किसी भी बड़ी चीज की कोई ख्वाहिश नहीं रहती। सिवाय अपने बच्चों के साथ रहने की, उनका प्यार और अपनापन पाने की। एक संरक्षण पाने की अपने बच्चों द्वारा जो संरक्षण और प्यार माता-पिता ने अपने बच्चों को दिया था।

हमारे देश के नौजवान पीढ़ियों को यह शिक्षा कौन देगा कि वे उनके अपने ही माता-पिता हैं जो अपने बच्चों की जरा-सी चोट लग जाने पर उनका दिल छलनी हो जाता था। अपने बच्चों के जरा से परेशान होने पर उनकी रातों की नींद उड़ जाती थी। माता-पिता अपनी सारी जिंदगी बच्चों का भविष्य संवारने में लगा देते हैं बिना किसी लालच के। अगर लालच भी होती है तो ऐसी की उसमे में बच्चों का ही हित होता था। मगर आजकल के बच्चों में इतनी शक्ति नहीं है कि माता-पिता के कुछ गिने-चुने वर्षों को वह ठीक ढंग से देखभाल कर सकें।

आजकल मनुष्य इतना भौतिकवादी हो गया है कि वे केवल भौतिक सुखों की कामना करता रहता है। इन भौतिक सुखों की उपस्थिति में अपने बीवी-बच्चों के साथ दिन गुजर बसर करना चाहता है। ऐसा नहीं है कि वे अपने माता-पिता की देखभाल नहीं कर सकते हैं। कमी उनके विचारों में आ गई है। उनके सोचने की शक्ति संकीर्ण हो गई है। वह अपने इन्हीं भौतिक सुखों के आगे अपने माता-पिता को रोड़ा समझने लगते हैं।

उनकी बुढ़ापे की बीमारियों को वे झेलना पसंद नहीं करते हैं। यही बच्चे यह भूल जाते हैं कि बचपन में न जाने कितने ही बीमारियों को उनके माता-पिता ने रोते-हंसते दूर किया था। उनके ऊपर आने वाली हर मुश्किलों को दूर किया था। उनकी ना जाने कितने ही मुश्किलों के बावजूद उनको अपने सीने से लगा कर रखा था।

हर मनुष्य को बस इतना ही सोचने की जरूरत है कि अपने बच्चों में ही अपने बूढ़े माता-पिता को देखें। हमें एहसास होगा कि हमारे बच्चों से काफी कम जरूरत हमारे बुजुर्ग माता-पिता को है। जब हम अपने बच्चों को हर वह चीज देने के लिए इच्छुक होते हैं। जिनकी उन्हें जरूरत है तो हम अपने माता-पिता को भी वे जरूरतें अवश्य दे सकते हैं।

बाकी बातें बस अपने मन को बरगलाने के लिए होता है कि जैसे उनकी हम देखभाल नहीं कर सकते। हमारे पास उनका ध्यान रखने के लिए समय नहीं है वगैरा-वगैरा। हमें अपनी अंतरात्मा अंतर आत्मा को जगाने की जरूरत है। जब हम उनकी जिंदगी की सारी जमा पूंजी रुपया-पैसा लेने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। ठीक वैसे ही तत्परता उन को संरक्षण देने में होनी चाहिए।

समाज का एक दूसरा पहलू यह भी है कि जो बच्चे विदेशों में कामकाज करते हैं। वह अपने साथ माता-पिता को नहीं रख पाते हैं। वे उन्हें वृद्धाश्रम में रखते हैं ताकि उनकी देखभाल अच्छे से हो सके। वहां उनकी अच्छे से देख-रेख हो सके। इसके लिए वे हर महीने उनके लिए खर्च राशि भी भेजते हैं। वृद्धाश्रम का प्रबंध होने से वृद्धों के लिए सहारा हो गया है।

कम-से-कम उनकी रोज सुबह-शाम देखने वाला तो कोई है जो उनकी खोज-खबर ले सके। वहां साथ में बैठकर बात करने वाले हम उम्र हैं। जो अपने मन की बात किसी से कह सकते हैं। मन का घुटन कुछ तो कम होता है। वहां उनकी चिकित्सा तथा खान-पान का ध्यान दिया जाता है।

बुजुर्ग किसी भी देश की आबादी का एक अभिन्न अंग होते हैं, जिन्हें किसी भी अन्य वर्ग की तरह समान रूप से सम्मान और ध्यान देना होता है। हालांकि, बदलते पारिवारिक ढांचे और आधुनिकीकरण के कारण, बुजुर्ग आबादी को सम्मानपूर्वक अपना जीवन जीने के लिए अपरिहार्य चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। अकेलापन, लापरवाही और कम महत्व, उम्र बढ़ने के कारण बीमारी और इलाज की कमी के कारण बुजुर्गों को सबसे अधिक विश्वासघाती परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है।

जीवन प्रत्याशा में वृद्धि के मामले में समाज ने जो प्रभावशाली लाभ अर्जित किए हैं, उनके कारण भारत में बुढ़ापा तेजी से बढ़ रहा है। बुजुर्ग आबादी में वृद्धि के साथ, समग्र देखभाल की मांग बढ़ती जा रही है। 2025 तक विकासशील देशों में वृद्धों की आबादी 840 मिलियन होने की उम्मीद है। यह अनुमान लगाया गया है कि 60 और उससे अधिक उम्र के भारतीयों का अनुपात 2010 में 7.5% से बढ़कर 2025 में 11.1% हो जाएगा।

भारत देश में वृद्धाश्रम तथा उनमें रहने वाले बुजुर्गों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। भारत में एक हजार से भी ज्यादा वृद्धा आश्रम है।

एक रिपोर्ट के अनुसार देश में इस समय 1150 वृद्धाश्रम हैं जिनमें लगभग 97000 लोगों को शरण देने की सुविधा उपलब्ध है।

भारत में वृद्धाश्रमों की सही संख्या का अनुमान दो कारणों से नहीं लगाया जा सकता है।

न तो भारत सरकार और न ही राज्य सरकारें अपने डोमेन में OAH की अद्यतन सूची रखती हैं। यहां तक कि जब कुछ राज्यों का दावा है कि उनके पास एक सूची है, तो वृद्धाश्रमों के बड़े पैमाने पर प्रसार के तथ्य से सूची अधूरी हो जाएगी। 2011 में हेल्पेज इंडिया में वृद्धाश्रमों की सूची सामने आई, यह 2009

में प्रकाशित उनकी पिछली सूची का एक संशोधन था। लेकिन सूची में ऐसे कई घरों के नाम भी शामिल हैं, जिन्होंने अपनी प्रश्नावली का जवाब नहीं दिया, ताकि यह सुनिश्चित न हो कि वे वर्तमान में मौजूद हैं या नहीं।

केरल सरकार ने 30/06/2014 को एनजीओ क्षेत्र में 532 मान्यता प्राप्त वृद्धाश्रमों की सूची जारी की है।

सरकारी क्षेत्र में OAHs। ऐसे कई घर हो सकते हैं जिन्हें सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं है। फिर भी, गैर-सरकारी संगठन क्षेत्र में कुछ और वृद्धि हुई है क्योंकि घर खोलने के लिए सरकार की अनुमति की आवश्यकता नहीं होती है। यह बताया जा सकता है कि केरल में देश में वृद्धाश्रमों की संख्या सबसे अधिक है और पिछले 4 वर्षों में राज्य में वृद्धाश्रमों की संख्या में 69% की वृद्धि हुई है (द हिंदू, 20 सितंबर, 2015)। द न्यू इंडियन एक्सप्रेस (जनवरी 9, 2016) पिछले 3 वर्षों में संख्या के दोगुने होने की रिपोर्ट करता है।

देश में वृद्धावस्था से संबंधित सामाजिक पहलुओं को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि वे उम्र बढ़ने की प्रक्रिया से गुजरते हैं। बदलती जीवनशैली, उपलब्धता, स्वास्थ्य देखभाल की उपलब्धता और वहनीयता, जीवन प्रत्याशा में वृद्धि, तेजी से शहरीकरण और आर्थिक निर्भरता ने भारत में बुजुर्गों के लिए विभिन्न समस्याओं को जन्म दिया है। **इसलिए "मुक्ता चैरिटेबल ट्रस्ट" ने इन जरूरतों की पहचान की है और बुजुर्गों को आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए, संगठन पूरे राजस्थान (Rajasthan) के 40 से 50 बुजुर्गों के लिए Jaipur जिले में एक वृद्धाश्रम बनाने का प्रस्ताव कर रहा है। परियोजना की कुल लागत 150000000/- है।**

राजस्थान राज्य में वृद्ध पुरुषों की तुलना में वृद्ध महिलाओं को अधिक महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। सामाजिक और पारंपरिक पारिवारिक संरचना के कारण उन्हें कई सीमाओं के साथ रहने के लिए मजबूर किया जाता है। इसलिए वे खुद को हाशिए पर पाते हैं और हर समय अलग -थलग पाते हैं। जैसा कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक समय तक रहती हैं, बड़ी संख्या में बड़ी उम्र की महिलाओं को अपने शादी के वर्षों में एक विधवा का जीवन जीना पड़ता है। सामाजिक हाशिए, अकेलापन, अलगाव और यहां तक कि वृद्धावस्था में लापरवाही से उनके मानवाधिकारों का बुनियादी उल्लंघन भी होता है।

विडंबना यह है कि राजस्थान में अशिक्षा के उच्च प्रसार और जागरूकता की कमी के कारण बड़ी उम्र की महिलाओं को उनके बुनियादी अधिकारों के बारे में पता नहीं है। चूंकि उनमें से अधिकांश जीवन भर अपने घरों की चार-दीवारों के भीतर रहते हैं, इसलिए वे असुरक्षित रहते हैं। बुजुर्ग महिलाओं को न केवल उम्र के भेदभाव का सामना करना पड़ता है, बल्कि बुढ़ापे में लैंगिक भेदभाव भी होता है।

2011 की जनगणना के अनुसार लगभग थे। राजस्थान में 28 लाख बुजुर्ग महिलाएं (राजस्थान की कुल बुजुर्ग आबादी का लगभग 51% है) ।

वृद्धाश्रम

भवन की डिजाइनिंग : स्वागत कक्ष/ अतिथि – कमरा/ गलियारे और सीढ़ियाँ/ भोजन कक्ष/

मनोरंजन के लिए हॉल/ बी मा र क म रा/ पुस्तकालय/ प्रार्थना कक्ष/ स्वास्थ्य जांच के लिए कक्ष स्टोर रूम/ तीन स्टोर रूम / गलियारे और सीढ़ियाँ/

भोजन कक्ष/ मनोरंजन के लिए हॉल/ ऑफ़िस रूम/ अधीक्षक के लिए कक्ष/

स्टाफ के लिए रिटायरिंग रूम/ काउंसलर, सामाजिक कार्यकर्ता के लिए कमरे।/ काउंसलर, सामाजिक कार्यकर्ता के लिए कमरे।/ मिनी व्यायामशाला/ सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली/

जल भंडारण और आपूर्ति/ गौसाला/ तालाब/ स्विमिंग पूल/ / सौर प्रणाली/ मंदिर/ बाहरी सभागार/ भोजन कक्ष/ रसोईघर /स्टाफ रूम/ कमरे विला प्रकार 10 एकल रूम 30 दोहरा कमरा/ 1 सामूहिक कमरा/ बिजली/ बागवानी/ सफाई और रखरखाव/ मरम्मत और रखरखाव

सारांश

एक सर्वे के अनुसार

राजस्थान में बुजुर्ग महिलाओं ने अधिक दृढ़ता से कहा कि उनकी स्थिति निम्न है। 90.75% बुजुर्ग महिलाओं ने स्वीकार किया कि उनकी पारिवारिक स्थिति निम्न है, जबकि 87.95% बुजुर्ग पुरुष उनके साथ सहमत पाए गए।

ग्रामीण क्षेत्रों में 91.64% बुजुर्ग उत्तरदाताओं और शहरी क्षेत्रों में 86.6% उत्तरदाताओं ने कहा कि बुजुर्ग महिलाओं की पारिवारिक स्थिति निम्न है।

कुल मिलाकर, केवल 5.24% बुजुर्ग उत्तरदाताओं (5000 उत्तरदाताओं में से 261) ने कहा कि

कुल मिलाकर, केवल 5.24% बुजुर्ग उत्तरदाताओं (5000 उत्तरदाताओं में से 261) ने कहा कि बुजुर्ग महिलाओं की पारिवारिक स्थिति उनके परिवार में कम नहीं है।

8.55% शहरी बुजुर्ग और 2.53% ग्रामीण बुजुर्ग उत्तरदाताओं ने कहा कि बुजुर्ग महिलाओं की पारिवारिक स्थिति अधिक है

84.07% बुजुर्ग उत्तरदाताओं (5000 उत्तरदाताओं में से 4201 उत्तरदाताओं) ने स्वीकार किया कि राजस्थानी परिवारों में अक्सर लिंग भेदभाव के कारण बुजुर्ग महिलाओं के प्रभुत्व से इनकार किया जाता है।

राजस्थान के बदले हुए सामाजिक-आर्थिक और जनसांख्यिकीय ढांचे में, बुजुर्ग महिलाओं को उम्र के भेदभाव, उम्रवाद, बड़े दुर्व्यवहार और वृद्ध समुदाय के दुर्व्यवहार की बढ़ती घटनाओं का सामना करना पड़ता है, जो कि किसी भी सभ्य समाज के सख्त खिलाफ हैं।

परिवार की संरचना बदलना

स्कूलों और कॉलेजों के पाठ्यक्रम के माध्यम से वृद्ध महिलाओं की जरूरतों और अधिकारों के प्रति जिम्मेदारी की भावना पैदा करना और पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली को बढ़ावा देना।

विधवाओं पर विशेष ध्यान देने वाली बुजुर्ग महिलाओं को समर्पित सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का नीति निर्धारण, निराश,

आश्रित वृद्ध महिलाओं और व्यावहारिक दृष्टिकोण के साथ इसका कार्यान्वयन।

विभिन्न सरकारी, गैर-सरकारी, व्यक्तिगत माध्यमों जैसे सामाजिक गश्त, स्वास्थ्य जांच पहल आदि के माध्यम से बुजुर्ग महिलाओं के सामाजिक संपर्क को प्रोत्साहित करें।

सदियों पुरानी संयुक्त परिवार प्रणाली वाला पारंपरिक भारतीय समाज वृद्ध लोगों की सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा की रक्षा करने में सहायक रहा है। भारतीय समाज के पारंपरिक मानदंडों और मूल्यों ने भी बुजुर्गों के सम्मान और देखभाल प्रदान करने पर जोर दिया। हालांकि, हाल के वर्षों में एकाकी परिवार की बढ़ती व्यापकता के साथ, आने वाले वर्षों में बुजुर्गों को भावनात्मक, शारीरिक और वित्तीय असुरक्षा का सामना करना पड़ सकता है। अकेले या जीवनसाथी के साथ रहने वाले बुजुर्गों के रहने की व्यवस्था के पैटर्न में 1992 में 9.0% से 2006 में 18.7% तक की वृद्धि हुई है। भविष्य में राष्ट्र के आर्थिक विकास और आधुनिकीकरण के साथ बुजुर्गों की पारिवारिक देखभाल में कमी आने की संभावना है।

सामाजिक समर्थन का अभाव

सामाजिक सुरक्षा प्रणाली पर कम सरकारी खर्च के कारण भारत में बुजुर्ग अधिक असुरक्षित हैं। शहरी क्षेत्र के बुजुर्ग तेजी से बढ़ते अराजक और भीड़भाड़ वाले शहर में अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए मुख्य रूप से किराए की घरेलू मदद पर निर्भर हैं। सामाजिक अलगाव और अकेलापन बढ़ गया है। बीमा कवर जो बुजुर्गों के प्रति संवेदनशील है, भारत में वस्तुतः न के बराबर है। इसके अलावा, पहले से मौजूद बीमारियों को आमतौर पर बुजुर्गों के लिए बीमा पॉलिसियों को अव्यवहार्य बनाने के लिए कवर नहीं किया जाता है। पेंशन और सामाजिक सुरक्षा उन लोगों तक ही सीमित है जिन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र या उद्योग के संगठित क्षेत्र में काम किया है। एक अध्ययन में। लगभग आधे उत्तरदाताओं ने उपेक्षित और उदास महसूस किया और महसूस किया कि लोगों का बुजुर्गों के प्रति उदासीन रवैया है। यह भी पाया गया कि 47% ने जीवन में दुखी महसूस किया और 36.2% ने महसूस किया कि वे परिवार के लिए एक बोझ हैं।

स्वास्थ्य देखभाल की उपलब्धता, पहुंच और वहनीयता

एकल परिवारों की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण, बुजुर्गों की देखभाल का प्रबंधन अधिक कठिन होता जा रहा है, विशेष रूप से कामकाजी वयस्क बच्चों के लिए जो अपने माता-पिता की भलाई के लिए खुद को जिम्मेदार पाते हैं।